मधुवन ओम् शान्ति अंक 258 जनवरी 2014

HAPPY NEW YEAR - 2014

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र, नये वर्ष की शुभ बधाईयां (13-12-13)

प्राणेश्वर अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा की अति लाडली, हिम्मत और उत्साह द्वारा सदा सफलता प्राप्त करने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व निश्चयबुद्धि विजयन्ती ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ पुराने वर्ष की विदाई और नये वर्ष वा नये युग के शुभ आगमन की दिल से सबको हार्दिक बधाईयां।

इस बीते हुए वर्ष में बाबा ने पूरे विश्व में कमाल की सेवायें कराई हैं। हम सबने दिल से मेरा सो तेरा कर, डबल लाइट बन देश विदेश में बापदादा को प्रत्यक्ष करने की अनेकानेक सेवायें की हैं। सभी ने दिलवर बाबा को दिल में बिठाए अपनी एकरस अचल अडोल, निर्विघ्न स्थिति का प्रैक्टिकल सबूत भी दिया है। अभी फिर नया वर्ष और भी नया उमंग-नया उत्साह लेकर सामने आ रहा है। बोलो, इस नये वर्ष में कौन से नवीनता भरे संकल्प आ रहे हैं! पहले तो जनवरी मास में हम सब प्यारे अव्यक्त बापदादा समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का शुभ संकल्प लेंगे। जैसे हमारे मीठे प्यारे बाबा ने 44 वर्ष अव्यक्त रूप से हम सबकी पालना की है, हम सबको इस पालना का रिटर्न करना ही है। तो इस जनवरी मास में सभी अन्तर्मुखी बन एकाग्रता की शक्ति से न्यारे प्यारे, अचल अडोल रहने की गिफ्ट बाबा से अवश्य लेंगे। बाबा कहते बच्चे, अब समय है अपनी शुद्ध अनासक्त वृत्तियों द्वारा अशुद्ध वृत्तियों के वायुमण्डल को परिवर्तन करने का। इसके लिए हर एक ब्राह्मण आत्मा को मन्सा सेवा पर विशेष ध्यान देना है। अब कोई भी पुरानी वा पराई बातें याद न करके आवाज से परे रह साइलेन्स का फायदा लेना है। दिन-रात उठते बैठते, खाते पीते, कार्य करते सच्ची याद की लगन में रहना है। कर्मयोगी बनने का मिसाल बन, देही-अभिमानी स्थिति में रह मधुरता सम्पन्न व्यवहार करना है। किसी की कोई भी बात दिल में रखकर उससे नफरत नहीं करनी है। बाबा कहते बच्चे सबकी दुआयें लेनी हैं तो दयावान बनो। दयावान का व्यवहार क्षमाभाव वाला होगा, इसलिए सारा दिन हाथ में लॉ नहीं उठाना है, लॉ के साथ लवफुल भी बनना है। पहले स्वयं की प्रैक्टिकल लाइफ में गुणों का रिकार्ड अच्छे से अच्छा हो। अन्दर एक बाहर दूसरा न हो। फिर दिल से सबको रिगार्ड, रिस्पेक्ट देते हुए एकता का किला मजबूत करना है। सिम्पल रहना है, सैम्पुल बनना है। बोलो, यही लक्ष्य रख तीव्रता सम्पन्न पुरुषार्थ चल रहा है ना!

अभी तो प्रकृति भी हलचल के अनेक दृश्य दिखा रही है, चारों ओर दु:खों के जैसे पहाड़ गिर रहे हैं, माया भी फुलफोर्स से अपना अन्तिम वार अजमा रही है। पिछले रहे हुए सब हिसाब-किताब भी बाहर आ रहे हैं। ऐसे समय पर बाबा के सच्चे योगी बच्चों की शक्तिशाली मन्सा ही सबके लिए सहारा बनेंगी। तो आओ हम सब इस नये वर्ष में यही दृढ़ता सम्पन्न संकल्प करें कि संगम के इस अमूल्य समय और संकल्पों को सदा समर्थ और शक्तिशाली बनाकर अपनी शुद्ध शक्तिशाली मन्सा द्वारा वायुमण्डल को शक्तिशाली बनायेंगे। एक बाप के प्यार में सब बातों को पार करते हुए उड़ती कला में उड़ते रहेंगे। इन्हीं शुभ संकल्पों के साथ फिर से सबको नये वर्ष की दिल से बधाईयां, मंगल कामनायें।

बाकी हमारी मीठी-मीठी दादी गुल्जार भी आप सबको दिल से याद देते हुए अपनी बधाईयां वा शुभ कामनायें दे रही हैं। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद... ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

वृत्ति द्वारा वृत्तियों को परिवर्तन करने की सेवा करो

1) वर्तमान समय प्रमाण अपने मन की वृत्ति और अव्यक्त दृष्टि द्वारा बहुत अच्छी सेवा कर सकते हो। वृत्ति-दृष्टि से सर्विस करने में कोई बन्धन नहीं है। सिर्फ आप अपनी उपराम वृत्ति द्वारा अव्यक्त स्थिति में स्थित रहो तो कैसी भी वृत्ति वाला आपके सामने आयेंगे, वह इस देह को न देख आपके चमकते हुए बल्ब को (आत्मा को) देखेगा और परिवर्तन हो जायेगा। उसकी दैहिक तमोगुणी दृष्टि और वृत्ति स्वत: परिवर्तन हो जायेगी।

2) अभी अपनी वृत्ति और दृष्टि को परिवर्तन कर नज़र से निहाल करने की सेवा करनी है। वाचा तो एक साधन है लेकिन कोई को सम्पूर्ण स्नेह और सम्बन्ध में लाना है तो उसके लिए वृत्ति और दृष्टि की सर्विस चाहिए। यह सर्विस एक स्थान पर बैठे हुए एक सेकेण्ड में अनेकों की कर सकते हो।

3) जैसे शुरू में बापदादा का साक्षात्कार घर बैठे हुआ वैसे अब दूर बैठे आपकी पावरफुल वृत्ति ऐसा कार्य करे जैसे कोई हाथ से पकड़ कर लाया जाता है, कैसा भी नास्तिक तमोगुणी बदला हुआ देखने में आयेगा। अब यह सर्विस करनी है लेकिन यह सर्विस सफलता को तब पायेगी जब आपकी वृत्ति और बातों से क्लीयर होगी। अभी मुख्य यह सर्विस है, इससे ही बेहद की आत्माओं को आकर्षित कर सकेंगे।

4) अपने तीन स्वरूप सदा स्मृति में रखो एक उपकारी हूँ, दूसरा निरहंकारी और तीसरा अधिकारी हूँ। कितना भी कोई अपकारी हो लेकिन आपकी दृष्टि और वृत्ति उपकारी हो, फिर जितना अधिकारी उतना निरहंकारी। जब वृत्ति से भी मैं-पन का त्याग होगा, स्मृति में सदैव बाप और दादा रहेगा और मुख पर भी यही बोल रहेंगे तब विश्वपति बन विश्व की सर्विस कर सकेंगे।

5) आपकी वृत्ति में जो होगा वही अन्य आपकी दृष्टि से देखेंगे। अगर वृत्ति देह-अभिमान की है, चंचल है तो आपकी दृष्टि से साक्षात्कार भी ऐसे ही होगा, औरों की भी दृष्टि वृत्ति चंचल होगी। यथार्थ साक्षात्कार कर नहीं सकेंगे। तो पहले अपनी वृत्ति के सुधार से अपनी दृष्टि को दिव्य बनाओ।

6) आपके सामने कोई कितना भी अशान्त वा बेचैन घबराया हुआ आये लेकिन आपकी दृष्टि, स्मृति और वृत्ति की शक्ति उनको बिल्कुल शान्त कर दे। भल कितना भी कोई व्यक्त भाव में हो लेकिन आप लोगों के सामने आते ही अव्यक्त स्थिति का अनुभव करे। आप लोगों की दृष्टि किरणों जैसा कार्य करे। जैसे मास्टर सूर्य के समान नॉलेज की लाईट देने के कर्त्तव्य में सफल हुए हो, वैसे अब किरणों की माइट से हरेक आत्मा के संस्कार रूपी कीटाणु को नाश करने का कर्त्तव्य करो।

7) अब अपने रूहानी रूप, रूहानी दृष्टि, कल्याणकारी वृत्ति द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने की सेवा करो। अभी सिर्फ भाषण की तैयारी नहीं करनी है। लेकिन भाषण द्वारा भाषा से परे स्थिति में ले जाने का अनुभव कराओ, इसके लिए रूहानी आकर्षण स्वरूप की स्मृति में रहो।

8) निरन्तर त्यागवृत्ति और तपस्यामूर्त्त बनकर हर सेकेण्ड हर संकल्प द्वारा आत्माओं की सेवा करो। आपके त्याग और तपस्या की शक्ति की आकर्षण वा पावरफुल वृत्ति द्वारा बेहद के आत्माओं की सेवा करो तो हद की छोटी-छोटी बातों में समय नहीं जायेगा। अभी तक हद की बातों में समय व्यर्थ कर फिर बेहद में टिकने चाहते हो, लेकिन अब वह समय गया। अभी तो बेहद की सर्विस में सदा तत्पर रहो तो हद की बातें आपेही छूट जायेंगी।

9) कहावत है – दृष्टि से सृष्टि बदलती है। तो कैसी भी तमोगुणी वा रजोगुणी आत्मायें आपके सामने आयें लेकिन आपकी सतोगुणी दृष्टि और नि:स्वार्थ वृत्ति से उनकी सृष्टि, उनकी स्थिति, उनकी वृत्ति बदल जाये। यही वर्तमान समय की विशेष सेवा है।

10) जितना आपकी वृत्ति पावरफुल होगी उतना वायुमण्डल भी पावरफुल बनेगा। जिस समय कोई में भी वीकनेस आती है तो पावरफुल वृत्ति का सहयोग मिलने से वह आगे बढ़ सकते हैं। कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है अपनी श्रेष्ठ स्मृति और वृत्ति से कमजोर को भी शक्तिशाली बना देना।

11) जैसे होम्योपैथिक दवाई की छोटी-छोटी गोलियां कितने बड़े रोग को खत्म कर देती हैं ऐसे आप मास्टर सर्वशक्तिमान् अपनी वृत्ति और दृष्टि से किसके भी कड़े संस्कार के रोग को खत्म कर सकते हो। जैसे वह दवाई यह नहीं कहती कि रोग को कैसे मिटायें, ऐसे आप मास्टर रचयिता मास्टर ज्ञान सूर्य सर्व आत्माओं के पतित संकल्पों वा वृत्तियों को भस्म करने की सेवा करो।

12) जैसे सूर्य अपनी किरणों से किचड़ा, गन्दगी के कीटाणु

भस्म कर देता है, वैसे कोई भी पतित आत्मा का पतित संकल्प समाप्त हो जाए। पतित-आत्माएं आप पतित-पावनियों के ऊपर वार करने के बजाए बलिहार जायें, इसके लिए अपने ऊंचे स्वमान में स्थित रहो। अपनी वृत्ति को रूहानियत से सम्पन्न बनाओ।

13) अपनी वृत्तियों को जब तक पावरफुल नहीं बनाया है तब तक वायुमण्डल में रूहानियत वा सर्विस में वृद्धि जो चाहते हैं वह नहीं हो सकती। बीज है वृत्ति, तो सर्विस की वृद्धि का आधार वृत्ति है। सदा हर आत्मा के प्रति रहम वा कल्याण की वृत्ति रहे, तो ऑटोमेटिकली आप लोगों के रहम वा कल्याण के वायब्रेशन अन्य आत्माओं तक पहुँचेंगे।

14) जैसे साइंस के साधन वायरलेस द्वारा आवाज को कैच करते हैं, सुन सकते हैं, वह है वायरलेस द्वारा और यह है रूहानी पावर द्वारा। इसमें वृत्ति अगर पावरफुल है तो वृत्ति द्वारा वायब्रेशन सामने वाली आत्मा को ऐसे ही स्पष्ट अनुभव होगा जैसे रेडियो का स्वीच खोलने से स्पष्ट आवाज़ सुनने में आता है।

15) अब वृत्ति द्वारा रूहानियत का घेराव वायुमण्डल में डालने की सेवा करो तो कोई भी आत्मा रूहानी आकर्षण से बाहर नहीं निकल सकती। अभी हर एक करामात देखना चाहते हैं लेकिन यहाँ करामात नहीं कमालियत दिखानी है। उन्हों की है रिद्धि सिद्धि द्वारा करामात और आपकी है वृत्ति द्वारा कमालियत। वृत्ति श्रेष्ठ होगी तो हर कृति (कर्म से) कमाल दिखाई देगी।

16) समय प्रमाण आप विशेष आत्माओं को अपनी अव्यक्त स्थिति, रूहानी लाइट और माइट की स्थिति द्वारा लाइट हाउस, माइट हाउस बन एक स्थान पर रहते हुए भी चारों ओर अलौकिक रूहानी सर्विस की भावना और वृत्ति द्वारा सर्विस करनी चाहिए इसको कहते हैं बेहद की सर्विस।

शिवबाबा याद है ? 4-3-12 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

''जो बाबा से मिला है उसका कदर रखो, सच्चाई और प्रेम आपके चेहरे से दिखाई दे'' (दादी जानकी)

कईयों को देखा है सच्चे हैं पर कोमल हैं, जरा भी किसी के लिये कोई फीलिंग है, तो हम न दिल से बाबा को याद कर सकते हैं, न ही सेवा कर सकते हैं इसलिये कोई कैसा भी हो गाली भी देता हो, गले लगायें। यह प्युअर फीलिंग हो, औरों के लिये गुड विशश हो। ऐसे बड़े दिल और रहम दिल वाले बनते हैं तो बाबा से पहले प्यार मिलता है फिर बाबा की ब्लैसिंग मिलती हैं। बाबा के प्यार से ही दुनिया को भूलना आसान हो जाता है। सब बातों से लगावमुक्त रहना इज़ी लगता है। मुख्य बात है अब जरा भी कोई फिकर न रहे, बेफिकर जीवन जियें। जो बाबा से मिला है उसका कदर हो। सच्चाई और प्रेम चेहरे से दिखाई देवे। शान्ति तो गले में हार के रूप में पड़ी है, यह अनुभव हो। कोई भी कार्य करो पर ईश्वरीय नशे से करो, तो वो चलन से मालूम पड़ता है। दिन-रात अपने मन-बुद्धि को देखते रहो, कभी कोई फालतू संकल्प न आवे। व्यर्थ शुरू होता ही है क्यों, क्या से। व्यर्थ संकल्प ही शत्रु है, इससे मुक्त हो जाओ तो यही संकल्प मित्र है। जो सच्चाई से पुरुषार्थ करे वो देवता। कोई बात का चिंतन नहीं करो क्योंकि बाबा बैठा हुआ है। पुरुषार्थ के लिए मिसाल बनो। ऐसी हमारी जीवन हो तो कोई तकलीफ नहीं है।

2) ''बाबा की आशीर्वाद लेनी है तो अपने ऊपर कृपा करो माना स्वयं पर पूरा अटेन्शन रखो''

बाबा के सिवाए और कोई बात अन्य कोई से सुनेंगे, तो वही सोचेंगे, फिर वही बोलेंगे भी। इस तरह की बाहर्मुखता में दु:ख ही मिलता है। सिवाए एक बाबा के और कुछ सुना, सोचा तो चाल-चलन में फर्क पड़ेगा। जो बाहर्मुखता में रहने वाले होते हैं, उनका बोल-चाल, चलन ही दूसरा होता है। तो जितना शान्त में रहो माना एकांत में रहो, अन्तर्मुखी रहो तो बहुत सुख पायेंगे। यह नहीं कि अन्तर्मुखता से शान्ति मिली, सुख भी मिला। बल्कि अन्तर्मुखी का बोल-चाल, चलन ही न्यारी होती है।

साकार में बाबा कहता था अपने ऊपर कृपा करो तो बाबा आशीर्वाद करेगा। कृपा करो माना स्वयं ही स्वयं पर अटेन्शन रखो। मैं कौन हूँ, मेरा कौन हूँ, ड्रामा कितना अच्छा है। यह सोच चलाने से व्यर्थ ख्याल बिल्कुल आ नहीं सकता। क्या करूँ, कैसे करूँ... माना व्यर्थ ख्याल शुरू कर दिया या कोई पुरानी बात को रिपीट करने से... व्यर्थ शुरू हो गया।

व्यर्थ अपने आप नहीं आता है बिचारा, जान बुझके ऐसा सोचते हैं तो व्यर्थ ख्याल आ जाता है। तो समझदार बाबा का बच्चा ये करूँ, ऐसे करूँ... से सब सहज लगता है। इस सहज मार्ग को छोड़ करके अपने आपको मुश्किलातों में डालना माना मुस्कराना बन्द कर देना। उमंग-उत्साह नहीं है तो याद भी नहीं है, सेवा भी नहीं है, आपस में मिलनसार सम्बन्ध भी नहीं होता है। संकल्पों में विश्वास हो, उमंग हो, उत्साह हो तो अपने आप सब अच्छा लगने लगेगा।

सदैव अलर्ट रहेंगे तब तो एवररेडी रहेंगे। क्या करूँ, कैसे करूँ... के ख्यालातों में अचानक कुछ हो जाये तो क्या होगा? मेरी हालत उस समय क्या होगी? तो जो बाबा कहता है वो करते रहने से कुछ भी हो जाये फिर भी बाबा भूल नहीं सकता। जिस बाबा के हैं उसके लिये ही काम करेंगे, फॉलो फादर करने में ही अच्छा है, फायदा है। बाबा समान बनना है, बाबा के साथ घर जाना है तो एक बाबा को ही देखना है, एक बाबा का कहना ही मानना है।

3) ''त्याग वृत्ति से सेवा करो तो सब दु:ख दूर हो जायेंगे''

जितना बाबा अच्छा है उतना परिवार भी बहुत अच्छा है। जिधर जाते हैं उधर परिवार ही परिवार देखते हैं। मनुष्यों का परिवार बढ़ता है तो वो बिचारे मूँझते हैं क्योंकि सम्भाल नहीं सकते हैं और बाबा का परिवार जितना बढ़ता जाता है उतना बाबा खुश होता है। रचना को देख रचता कैसा है, वही आंखों के आगे घूमता रहता है।

भक्ति में भगवान को खुश करना सहज है, ज्ञान में खुश करना इतना सहज नहीं है क्योंकि ज्ञान में यह छोड़, यह भी छोड़... त्याग वृत्ति बनानी पड़ती है, वो भी एक दो दिन या थोड़े दिन के लिये नहीं, सदा के लिये परिवर्तन करना है तब बनेंगे तपस्वीमूर्त। सेवा करते कोई याद आया माना त्याग वृत्ति में कमी है। त्याग वृत्ति से सेवा करने से सब दु:ख दर्द दूर हो जाता है इसलिए तन से सेवा करना बहुत जरुरी है। अब ऐसा गहरा पुरुषार्थ करो और कोई संकल्प को आने नहीं दो, मैं हूँ आत्मा, मैं हूँ आत्मा... अन्दर जाने से आत्मा शुद्ध हो गई, शान्त हो गई और ऊपर जाने से शक्ति आ गई। अब बाबा से जो श्रीमत मिले उस पर चलना है। मनमत, परमत नहीं। परमत में खतरा है, ईश्वर की मत से दूर कर देता है। लोभ मोह वश परमत नुकसानकारक है। मनमत देही-अभिमानी बनने नहीं देता है। देह में होते भी न्यारे हैं तो यहाँ बैठे हैं।

कइयों को व्यर्थ करना आता है, सफल करना नहीं आता है। समझदार बाबा का बच्चा वो जैसे बाबा कहा वो किया तो मन, वाणी, कर्म श्रेष्ठ हो गया। अगर कोई कहे मेरा घर भी है, बच्चे भी हैं, दुकान भी है, मकान भी है तो वो समर्पण नहीं है। कई जगह समर्पण समारोह मनाते हैं, मैं कहती हूँ ठगी करते हैं। क्या समर्पण करते हैं - हार पहनते हैं, चुनरी पहनते हैं पर बुद्धि से समर्पण हुए? सबसे बड़ी माया है मोह, काम महान शत्रु है। जहाँ काम है, वहाँ क्रोध अवश्य होगा ही। कान से कोई ऐसी बात सुनते हैं तो गुस्सा आता है, जीभ को खाने में जो अच्छी नहीं लगती है तो गुस्सा आता है। तो जीभरस, कनरस छोड़ो, एक बाबा की याद के रस में रहो तो बाबा रसगुल्ले खिलायेंगे यानि रसगुल्ले समान मीठे प्यारे मधुर बनेंगे। रसगुल्ला सफेद होता है, बहुत बढ़िया मीठा होता है। गुलाबजामुन कोई भी बना सकता है। बाबा ने ब्रेड बनाके भी खिलाया था क्योंकि बाहर का तो खाना नहीं होता है ना, तो बाबा सब संकल्प पूरा करता है। हम सिर्फ यह खाऊं, यह खाऊं पेट में बलाऊं वाला काम नहीं करके जो बाबा खिलावे वो खाऊं, जहाँ बिठावे वहाँ बैठूँ... तो सदा मुस्कराते रहेंगे।

4) ''सदा खुशराज़ी रहना है तो परचिंतन, परदर्शन, परदोष को छोड़ सदा शुभचिंतन में रहो'' (टीचर्स प्रति)

दूध और पानी को अलग कर देना यह हंसों के लिये सहज बात है। सभी ऐसे होली-हंसों की सभा में बैठे हैं ना। शुरू में जो दूध ले आते थे वो विश्वकिशोर को देख वापस ले जाते थे क्योंकि उसके पास एक थर्मामीटर था, वो दूध में डालके बतायेगा इस दूध में कितना पानी मिक्स है। ऐसे हम सबको बनना है। परमत मिक्स न हो। मुझे ऐसे काम थर्मामीटर की तरह करना है, जो हमारे हाज़िर होने से दूध पानी अलग हो जावे। झूठ जरा भी मिक्सअप न हो।

बहनों को बातें करने की थोड़ी आदत होती है वो बाबा को अच्छी नहीं लगती है। चूँ चाँ सब बन्द करके शान्त रह बाबा को याद करो क्योंकि जहाँ बात है वहाँ बाप नहीं, जहाँ बाप है वहाँ बात नहीं इसलिए बाबा कहता है फालतू बातें करना, यह परधर्म है। शुभ चिंतन के अलावा बाकी सब चिंतन बुरी बला है। बाप को याद करने और बाबा से बात करने से सकाश, स्नेह और शक्ति मिलती है इसलिए आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार पास विद ऑनर में आने वाला बाबा का बच्चा बनना है। बनना हो तो ऐसा नम्बरवन, टू थ्री में नहीं क्योंकि ब्राह्मणों की माला नहीं बनती। इसके लिये हूँ हाँ नहीं करना, कभी पीछे मुड़के नहीं देखना, किसकी याद न आवे और मेरे को भी कोई याद न करे क्योंकि मैं जहाँ भी हूँ, मैं बाबा के पास बैठी हूँ, बाबा की याद में बैठी हूँ इसलिए मेरे को याद न करके बाबा को याद करो। कभी यह भी नहीं कहो कि मेरे को कोई नहीं पूछता है... चुप, क्यों बाबा नहीं पूछता है

क्या! यह खोटी बातें यहाँ नहीं करना। बाबा बहुत अच्छा, बहुत अच्छा ऐसे सिर्फ कहो नहीं, अच्छा बनके भी दिखाओ। जो बाबा को अच्छा लगता है वो करना है। मेरे को यह अच्छा लगता है या इसको यह अच्छा लगता है, यह नहीं, जो बाबा को अच्छा लगता है वो करो, सदा खुश रहो, प्रभु के गले का हार बनो। यह ऐसा है, यह ऐसा है यह परदर्शन, वर्णन काहे को बैठके करें, ऐसी कोई आदत हो परदर्शन, परचिंतन की, परदोष की वो सब छोड़ो तो फिर आपको कोई को पूछना नहीं पड़ेगा कि आप ठीक हो! कैसे हो? बाबा के बच्चों को कोई पूछे कि आप राज़ी-खुशी हो तो यह शोभता नहीं है।

संगमयुग में हर श्वांस, हर संकल्प में बहुत कमाई है। श्वांस का शरीर से, संकल्प का आत्मा से कनेक्शन है। संगम पर हमारे लिये परमात्मा बाप, शिक्षक, सतगुरु तीनों ही धर्मराज के रूप में भी दिखाई पड़ता है क्योंकि लास्ट में तीनों ही रूप मर्ज कर देता है। तो संगम पर परमात्मा हमारे लिये बाप, टीचर, सतगुरू के रूप में क्षमा, रहम, दया, स्नेह का सागर बनके ऐसा प्यार से पाला है जो समझाया नहीं जाता है, शब्दों में बतलाया नहीं जाता है, यह किसका अनुभव है? पर बाबा का प्यार एक सेकेण्ड में इमर्ज करके दृष्टि द्वारा औरों को अनुभव कराया जा सकता है। बाबा न सिर्फ खुशी देता है पर अशरीरी बनाकर शक्ति देता है तो लगता है कि बाबा का प्यार जीते जी मरना सिखाता है। बाबा के प्यार में मरना अच्छा लगता है, खुशी होती है, नहीं तो दु:ख होता है। संगमयुग पर पुरानी दुनिया से सब ऐसे मरे पड़े हैं ना और नई दुनिया में जाने के लिये श्वांस, संकल्प में बाबा को लेकर बैठे हैं माना बाबा के साथ हैं या बाबा मेरे साथ हैं।

तो ड्रामा अनुसार जो सीन सामने है, देख भी रहे हैं, प्ले भी कर रहे हैं। वैसे उस नाटक में देखने वाले अलग होते हैं और प्ले करने वाले अलग होते हैं, वो स्टेज पर होते हैं और देखने वाले वहाँ होते हैं। पर हमारा संगम का स्टेज ऐसा है, देख भी खुद ही रहे हैं और प्ले भी खुद ही कर रहे हैं। साक्षी हो करके सारा सीन देख रहे हैं और बाबा को साथी बना करके प्ले कर रहे हैं। ऐसे हम बाबा के बच्चों की लाइन क्लीयर है माना क्लेवर (Cleaver -होशियार) हैं। बुद्धि की लाइन क्लीयर तब ही होगी जब पहले बुद्धि क्लीन होगी। ऐसों के लिये अपने आप दिल से दुआ निकलती रहती है। जो सतगुरु की श्रीमत पर चलता है, उसे बाबा ऐसी सौगात देता है जो उसे देख सबको खुशी होती है।

जो हमारे संकल्प हैं, कर्म हैं, माया है, कुछ भी है वो सब बाबा मुरली में बताता है और छुप-छुपके देखता भी रहता है। विकर्माजीत वही बनेगा जिसको कर्मातीत बनने का ख्याल होगा। वह कर्म भी श्रेष्ठ करेगा क्योंकि उसे मालूम है कि कर्मों की गति अति गुह्य है। दिव्य बुद्धि दाता बाबा ने बुद्धि दी है तो दिल हमारी बताती है कि बाबा ने क्या दिया है? वो कर्म में लाओ, सम्बन्ध में लाओ तब चाल-चलन में बाबा और बाबा की याद ही दिखाई देगी। अच्छा।

23-10-13

डबल विदेशी भाई बहिनों की क्लास में जयन्ती बहन ने गुल्जार दादी से कुछ प्रश्न पूछे, जिनका उत्तर दादी जी के शब्दों में

प्रश्न:- दादी, बाबा को शुरूआत में जब साक्षात्कार होने लगे, एक ऐसा भी साक्षात्कार हुआ जैसे कि ऊपर से तारे आ रहे हैं और जब धरती के नज़दीक पहुँचते हैं तो वो अपने असली दैवी स्वरूप धारण करके इस सृष्टि पर आते फिर उन देवताओं का आपस में इतना सुन्दर कम्यूनिकेशन जैसे कि मुख से शब्द नहीं बोल रहे हैं परन्तु जैसेकि गीत गा रहे हैं, म्यूजिक बजता और जिस समय वो चलते तो उन्हों की चाल जैसेकि रास की तरीके से होती, तो यह हमने सुना है लेकिन आपने तो साक्षात्कार भी सभी बातों का किया है तो आज हमें आप यह बतायें कि देवताओं की आपस में कम्यूनिकेशन किस तरह से होती?

उत्तर:- अभी आप सभी अनेक बार अपने स्वर्गिक दुनिया में रहे हैं, राज्य किया है और अभी संगमयुगी रूप में बैठे हैं तो आप भी याद करो कि हम कल्प कल्प सतयुग की दुनिया में राज्य अधिकारी बन करके रहे हैं। तो सभी अनुभवी होंगे। फिर भी अभी जो यह क्वेश्चन कर रही है तो वहाँ क्या है कि खुशी है बहुत। दु:ख का नाम-निशान ही नहीं है। तो वह खुशी की झलक जो है ना, वो चलने में बैठने में, उठने में, मिलने में वह ऑटोमेटिकली होती है। तो जो ऑटोमेटिकली चीज़ होती है वो बहुत सुन्दर लगती है। थोड़ी बनावटी होगी तो वो फर्क हो जाता है ना। तो उनकी डायरेक्ट लाइफ ही खुशी की है, खुशी भी है और सर्व प्राप्ति स्वरूप भी है। तो जहाँ सर्व प्राप्तियाँ हैं उस सर्व प्राप्ति का फीचर्स पर असर है। एक होता है कोई

बात होती है तो खुशी होती है, लेकिन यह जीवन ही खुशी की है, इसी कारण उन्हों की जो भी चलन है ना, वो न्यारी और प्यारी है। तो जो यह सुना रही है वह तो कॉमन है वहाँ, नेचुरल लाइफ वह है। तो आप सोचो वो कौन थे? आप ही थे ना। तो आपकी ऐसी लाइफ थी और हर 5 हजार वर्ष के बाद आपकी ऐसी लाइफ बननी ही है, अभी भी बनेंगी, अभी अभी जायेंगे तो कहाँ जायेंगे! तो वहाँ जो भी होगा खुशी का रूप होगा, तन्दरुस्ती का रूप और सर्व प्राप्ति सम्पन्नता का रूप, वहाँ हर देवता का होता है।

प्रश्नः- दादी, कुछ कारोबार की जरुरत ही नहीं होगी? और राज्य चलाने का जो कारोबार होता... फिर जिस समय वो एक दो को देखते हैं तो उन्हों की दृष्टि कैसी होती? एक दूसरे को किस तरह से देखते हैं?

उत्तरः- कारोबार है, बच्चे पढ़ाई पढ़ने जायेंगे लेकिन वहाँ पढ़ाई क्या होगी! ज्ञान तो यहाँ संगमयुग का ही चलता है, उनका फल है। तो पढ़ने में मेहनत नहीं, जैसे खेल होता है। जैसे आजकल पढ़ते हैं लोग तो बोझ समझते हैं। वहाँ खेल खेल है। राज्य कारोबार भी सिम्पल है क्योंकि लड़ाई झगड़ा वगैर है नहीं जो सोचे क्या करना चाहिए। क्वेश्चन ही नहीं है। सर्व प्राप्ति हैं और लोग जो है उनके वायब्रेशन भी शुद्ध हैं तो कुछ सोचने की जरुरत नहीं। नेचुरल लाइफ ही ऐसी है। तो एक दो को देख करके वायब्रेशन ऐसा शान्ति का, सुख का, आनन्द का, प्रेम का आता है।

प्रश्नः- तो वहाँ ज्यादा साइलेंस का ही कम्यूनिकेशन होता है? और बाबा जो कहते हैं एक नेचुरल आत्मिक स्थिति होगी तो वहाँ का अनुभव आत्म स्मृति का कुछ अलग ही होगा? क्योंकि संगमयुग में जो हमें सोचना पड़ता है, याद रखना पड़ता है, स्मृति को पक्का करना पड़ता है आत्मिक स्मृति का तो वहाँ पर उन्हों की किस तरह से आत्मिक स्मृति होगी?

उत्तरः- नहीं, साइलेंस का नहीं होता है। जो कार्य है उसी रीति से एक्शन होता है, समझो स्कूल में जायेंगे तो वहाँ साइलेंस थोड़ेही चाहिए। जैसा समय होगा वैसी एक्ट होगी, वैसे रूप होगा लेकिन खुशी एक नेचुरल है, खुशी चेहरे में लानी है वो नहीं है, नेचुरल खुशी है। यहाँ सोचना पड़ता है वहाँ नेचुरल रूप है। यह सोचना नहीं पड़ता है खुश रहना है, खुश हैं ही। मेरी नेचर ही खुश है जिसकी नेचर ही खुश होगी उसको खुश रहना है, यह सोचने की जरुरत नहीं है।

प्रश्नः- फिर संस्कार सबके पवित्र हैं, शुद्ध और श्रेष्ठ संस्कार हैं परन्तु संस्कारों की वैराइटी कुछ नज़र आयेगी? या सबके संस्कार एक समान नज़र आयेंगे? या कुछ भिन्नता होगी संस्कारों में? मानो कि श्री लक्ष्मी है, श्री नारायण है दोनों के चाल-चलन में क्या फर्क होगा? और यह स्त्री है, यह पुरुष है यह भेद भी नहीं होगा?

उत्तरः- वो तो राजा और प्रजा में फर्क तो होगा लेकिन प्रजा भी सारी खुश है ना, सर्व प्राप्ति की लहर है इसीलिए खुशी में कोई में अन्तर नहीं होगा, खुश सब होते हैं। दूसरी बात कि जैसे राजा होगा तो राजाई के संस्कार प्रजा में तो नहीं होंगे ना। वो राजाई के संस्कार होंगे लेकिन खुशी के वो नेचुरल होगी। श्री लक्ष्मी श्री नारायण के चाल-चलन में फर्क नहीं होगा, उनकी खुशी, उनका रूहाब उनका वो दोनों में होगा क्योंकि दोनों ही पुरुषार्थ की प्रालब्ध में है इसलिए उन्हों को पुरुषार्थ करना नहीं पड़ता, नेचर है। स्त्री-पुरुष का नॉलेज सब है, क्योंकि दृष्टि वृत्ति में चलेंगे, कारोबार में चलेंगे तो स्त्री और पुरुष, समझो राजा और रानी है, लक्ष्मी-नारायण है तो नारायण तख्त पर बैठेगा, लक्ष्मी थोड़ेही बैठेगी!

जयन्ती बहनः- लक्ष्मी को अपना तख्त कुछ नहीं है? सिर्फ नारायण तख्त पर बैठेगा? दादीः वो अपनी फैमिली में होगी, तख्त पर तो नहीं होगी। बाकी सेरीमनी में साथ में बैठेंगे लेकिन राज्य कारोबार के समय तो अकेला ही बैठेगा।

जयन्ती बहनः- यह तो आज मैं नई बात समझ रही हूँ दादी कि अकेला नारायण ही तख्त पर बैठेगा। दूसरा दादी लक्ष्मी नारायण आपस में कुछ डिसकस करेंगे, तो दादी बोली हाँ, बातचीत करेंगे, हसेंगे खेलेंगे क्यों नहीं! बाकी आप सब ही तो बने हैं ना! वो तो अभी भी याद करो तो वह खुशी आ जाती है।

प्रश्नः- आज तक दादी मैं यह सोचती थी कि हाँ कुछ फर्क होगा जरुर, फिर भी नम्बरवन बाप कहेंगे और फिर नम्बर टू शब्द शोभता नहीं है परन्तु फिर भी वैसे तो श्री लक्ष्मी फिर श्री नारायण परन्तु फिर भी... आज मेरी बुद्धि में एक अभी नई बात आ रही है जो बाबा कहते हैं कि आप अपना लक्ष्य रखो लक्ष्मी-नारायण बनने का... तो मुझे लगता है कि सिर्फ नारायण बनने का लक्ष्य रखना चाहिए!

उत्तरः- खुशी और मर्तबे में हर एक का मर्तबा नम्बरवन अपने अनुसार है। जयंती बहन ने कहा हाँ, यह बात बहुत अच्छी बताई आपने दादी। परन्तु राज्य करने समय सिर्फ वह एक अकेला ही होगा... तो दादी ने कहा उनके साथी जो राजधानी की कारोबार में जो मददगार होंगे वो तो साथ होंगे ना, लक्ष्मी नहीं होगी लेकिन साथी तो होंगे, अकेला थोड़ेही होगा। लक्ष्य के लिए भले लक्ष्मी-नारायण दोनों ही कहा जाता है फिर भी नम्बरवन टू के हिसाब से तो पहले नारायण को रखेंगे ना।

प्रश्नः- जैसे कहते हैं कि राज्य रानी का और हुकुम सरकार का तो रानी का भी तो कुछ राज्य होगा ना?

उत्तर:- वो तो समानता होती है वहाँ, ऐसा नहीं समझो कोई भी काम है नारायण, लक्ष्मी के ऊपर रखता है तो लक्ष्मी भी ऐसा ही करेगी जैसे नारायण, दोनों को बुद्धि की अथॉरिटी तो है ना, कम नहीं होते हैं, दोनों ही में अपनी अपनी शक्ति, अपना अपना संस्कार, अपनी अपनी ड्यूटीज़... दोनों की अपनी अपनी है।

प्रश्न:- देवताओं का जो कम्यूनिकेशन है जैसे आपने बताया कि खुशी का लेन-देन एक नेचुरल रीति से चलता परन्तु सूक्ष्मवतन में जब जाते हैं वहाँ पर कम्यूनिकेशन किस तरह से होता? वतन में साक्षात्कार में वहाँ कम्यूनिकेशन कैसे होता? आप बताते हैं ना आज बापदादा ने बांहों की माला पहनाई फिर आप बहुत डिटेल में हमें बताते हैं कि बाबा ने यह कहा, बाबा ने ऐसे बताया आदि आदि... तो वो आप कैसे समझते हैं कि बाबा ने कैसे आपको बताया? और बाबा को जब आपको सन्देश देना होता है जो आप फिर आके हमें बताते हैं तो वो बाबा क्या आपकी बुद्धि को टच करता और वो आप समझ जाते हैं? क्योंकि हमने यह सुना हुआ है कि वतन में साइलेंस वा मूवी में ही सब कुछ चलता... या आपको लगता है जैसे बाबा आपको आवाज़ से बता रहा है।

उत्तर:- हम जब सूक्ष्मवतन में ध्यान दीदार में जाते हैं तो वो तो जैसे यहाँ दिखाई देते हैं ना, वैसे ही बाबा दिखाई देता है, बाबा आया, दूर से देखा तो उठा, मिला। जैसे यहाँ दिखाई देता है वैसे वहाँ भी एक्ट में दिखाई देता है। और जब कोई सन्देश लाना होता है तो बोलते हैं, बाबा बात करता है। जैसे सुनके कोई रूबरू जवाब देवे ना, ऐसे अनुभव होता है। लेकिन हम भी उस समय मूवी होते हैं ना तो हमको नेचुरल लगता है। समझ में ऐसे आता है भले बोलें कैसे भी, लेकिन समझ में ऐसे ही आता है जैसे टॉक कोई करता है यानि मुश्किल नहीं, यह क्या कहा बाबा ने! जैसे नेचुरल हम सुन रहे हैं, बाबा बोल रहा है और मैं भी तो परिवर्तन हो जाती हूँ ना, फरिश्ता बन जाती हूँ, तो नेचुरल लाइफ हो जाती है। फरिश्ते रूप में मैं भी तो आकारी हो जाती हूँ ना। तो आकारी को आकारी की बात समझना इज़ी होता है। आप सभी को अनुभव करना है तो अमृतवेले आप बैठके एक बारी चक्कर लगाके आओ। जितनी-जितनी पॉवरफुल अशरीरीपन की अवस्था होगी उतना ही कैच कर सकेंगे ना। यथाशक्ति होगा ना।

प्रश्न:- अभी यदि हमें देवता बनना है तो अभी हम किस प्रकार से पुरुषार्थ करें जो हमको अभी से ही गैरंटी हो अपने लिये चाहे दूसरे के लिए कि हाँ यह देवता पद प्राप्त करने वाले हैं, तो हमारा कम्यूनिकेशन किस तरह का होना चाहिए? और वर्तमान हम ब्राह्मणों की कम्यूनिकेशन आपस की कैसी होनी चाहिए?

उत्तर:- नहीं, मैं तो समझती हूँ देवता से पहले अभी का जो हमारा स्वरूप है ब्राह्मणों का, देवताओं से ऊंचा है और अभी डायरेक्ट परमात्मा हमसे मिल रहा है, हमसे बोल रहा है, वहाँ तो यह होगा ही नहीं। तो अभी हमारा ब्राह्मण रूप जो है वो सबसे सारे कल्प में श्रेष्ठ जन्म, अगर हम देखें तो ब्राह्मण जन्म है। वर्तमान हम ब्राह्मणों का कम्यूनिकेशन वही होना चाहिए जो अगर हम किससे मिलते भी हैं, तो इस समय भले ब्राह्मण रूप में हैं लेकिन ब्राह्मण फरिश्ते हैं, फरिश्ते फिर देवता है यह ज्ञान बुद्धि में होना चाहिए कि किससे मैं मिल रही हूँ, यह कौन-सी आत्मा है, उस आत्मा का अभी क्या है, भविष्य में क्या है... वह बुद्धि में ऑटोमेटीकली आना चाहिए। और उसी रूहाब से एक दो को मिलना चाहिए। साधारण नहीं कि यह फलानी है यह फलाना है तो फिर फलानी का वो संस्कार भी सामने आ जाता है। यह ऐसी है वैसी है, अगर फरिश्ते रूप में देखें तो फिर यह नहीं होगा। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

परखने की शक्ति से व्यर्थ संकल्पों को परिवर्तन करो

(प्रश्न बहनों के उत्तर दादी जी के)

प्रश्न:- संस्कारों को बदली किया जा सकता है या नहीं? किस आधार पर हम परख सकते हैं कि मेरे संस्कार ठीक हैं?

उत्तर:- ज्ञान का अर्थ ही है पुराने संस्कारों को बदलना। हम संस्कारों को ही तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। जहाँ तक परखने की बात है-वह तो सहज है। यूँ तो जैसे किसके गुण वर्णन करते हैं, फलाने में यह गुण है, तो देखना है मेरे में वह गुण हैं। इसको कहा जाता है अपने को परखना। अगर मैने अपने संस्कार को जान लिया तो फिर उसको कहा जायेगा रियलाइज़ किया। अगर परिवर्तन नहीं किया तो कहेंगे पूर्ण रूप से रियलाइज़ नहीं हुआ है। जिस संस्कार को मैने रियलाइज़ किया कि यह ठीक है तो देखना है कि वह सबको ठीक लगता है? यदि औरों को वह ठीक नहीं लगता तो उसे ठीक नही कहेंगे। हम देखते हैं कि यह मेरा संस्कार औरों को रुकावट डालता है तो समझना चाहिए उसको बदलना जरूरी है। अब

उसको बदलने के लिए ज्ञान की शक्ति चाहिए। एक है अपने से रियलाइज करना। दूसरा है कि दूसरे हमको रिजल्ट में राइट नहीं समझते हैं तो रियलाइज माना मैं उसको चेन्ज करूं। यदि हमारा संस्कार सर्विस का सबूत नहीं देता है तो इसका मतलब कि वह संस्कार हमारा ठीक नहीं है, उसको हमें बदलना है। नहीं बदलते तो ज्ञान से रियलाइज नहीं किया है। हमें संस्कार को उस दृष्टि व उस अन्तर से देखना है कि सर्विस करता है वा नुकसान करता है।

प्रश्न:- गीता में है इन्सान स्वभाव के वश है...

उत्तर:- लेकिन वह इंसान की बात है, हम इस समय न इन्सान हैं, न देवता है। हम तो ब्राह्मण हैं। इन्सान में सहन करने की शक्ति नहीं है। वह निंदा-स्तुति, मान-अपमान सहन नहीं कर सकेंगे। बात है अब हम ब्राह्मणों की। जैसे देखो हम कईयों को कहते हैं कि ज्ञान के बिना कोई यह नहीं सोचता कि काम विकार को वृत्ति से ही जीतना है। हम कहते हैं वृत्ति में भी यह संकल्प न उठे क्योंकि देवताओं में यह वृत्ति नहीं है। हम मनुष्य से देवता बनते हैं तो हमारा यह संस्कार पूर्ण रूप से परिवर्तन हुआ ना। बाबा ने युक्ति दी कि ज्ञान सहित भाई-भाई की दृष्टि से देखो तो वृत्ति बदल जायेगी। तो इंसान के संस्कार को पलटाकर देवताई संस्कार बनाया ना। हम यह पुरूषार्थ करते हैं और ज्ञान सहित वृत्ति से भी इस संस्कार को बदल देते हैं। बाबा हम बच्चों को अभी बहुत सूक्ष्म ले जाता है। बाबा कहते बच्चे किसी भी प्रकार की आपमें अटैचमेंट नहीं चाहिए। ब्रह्मा में भी न हो। तो जैसे बाबा एकदम देह की अटैचमेन्ट से हम बच्चों को परे ले जाते हैं। देहधारी का सहारा भी नहीं। हम कहते कारोबार में तो एक दो का सहारा चाहिए ना। परन्तु नहीं। बाबा कहते बच्चे इनसे भी परे क्योंकि बाबा जानते हैं आत्मा देह में है तो उनका यह संस्कार है। तो बाबा हमें उनसे भी ऊंचा ले जाते कि किसी भी प्रकार से कोई देहधारी की याद न आये। एक शिवबाबा के सिवाए और कोई की भी याद न रहे।

कभी बात करते-करते आपस में समझो कोई ऐसा शब्द निकल जाता तो फौरन उसी समय हम सॉरी बोलेंगे, परन्तु ऐसी भाषा निकलती ही क्यों है, जो सॉरी भी करना पड़े। कई फिर कह देते आखिर भी हम कितना समय सहन करेंगे.... परन्तु हम कहते हैं यह भी भाषा अब क्यों होनी चाहिए फिर भी तो हम सागर के बच्चे हैं। सागर में तो सब समा जाता है। तो हमारे में सब समा जाना चाहिए। आत्मा में यह जो फीलिंग आती है कि कब तक सहन करूं, यह फीलिंग भी निकल जानी चाहिए। भले ही रांग, राइट क्या भी है, वह भले बताऊं, और उसको समाकर मैं किनारा कर दूं। बाकी यह जो समझते हैं मैं कितना सहन करूंगी, कब तक सहन करूं, ऐसा समझने से दिल भरती जायेगी। तो मैं ऐसे अपने दिल को क्यों भरूं! हम तो सागर के बच्चे मास्टर सागर हैं, सब समाते जायें, ऐसा न समझें हम सहन करते हैं।

मैं तो समझती हूँ, अभी हमें यह भी नहीं समझना चाहिए कि मैं पुरूषार्थी हूँ। हम तो मास्टर सम्पूर्णता के सागर हैं, मैं तो अब समय के समीप पहुँची हूँ। फरिश्ता स्वरुप मेरे सामने खड़ा है। बाबा मुझे उस सीट पर देखना चाहता है। तो मै अब ऐसे न कहूं कि 80 परसेन्ट हैं, मुझे सर्टीफिकेट लेना है तो मैं अब 90-95 परसेन्ट हूँ। बाबा कहते हैं अब तुम्हारी सम्पूर्णता की स्टेज चाहिए। तुम एन्जिल हो और मैं कहूं कि नहीं मैं पुरुषार्थी हूँ, ऐसा क्यों? हाँ मैं यह ध्यान रखूं, बाबा जो एन्जिल के चिन्ह व गुण बताते हैं मैं उसके ऊपर चलूं।

प्रश्न:- कई बार ऐसे होता है कि अपने को परख भी लेते परन्तु फिर निर्णय नहीं कर सकते उसको क्या कहा जाए?

उत्तर:- यह ज्ञान की कमी ही कहेंगे। (वह कमी कैसे भरी जाय?) उसके लिए रोज़ जो बाबा की मुरली, बाबा की शिक्षायें, समय-समय पर जो बाबा युक्तियां बतलाते हैं वह ऐसे समझें कि मेरे लिए हैं। यह बाबा का एक-एक रत्न मुझे प्रैक्टिकल में लाना है। इस प्रकार अटेन्शन रखने से भी कमी भर सकती है। ज्ञान की कमी को भरने के लिए जो शक्ति चाहिए उसके लिए मैं समझती हूँ, एक तो बाबा की मुरली बहुत जरूरी है और दूसरा जो ऐसे शक्तिशाली हैं जिनके संग से खुद में शक्ति भर सकते हैं, उनका संग करें। जितना-जितना उसके संग में कर्तव्य करते जायेंगे तो अपने में शक्ति भरती जायेगी। हरेक कमजोरी को मिटाने के लिए मैं समझती हूँ कि नशे में रहना बहुत जरूरी है।

प्रश्न:- समझो अगर दो साथी हैं दोनों कमजोर हों तो क्या किया जाए?

उत्तर:- हाँ, यह है मुख्य बात। जैसे बाबा कहते हैं कभी भी अपनी कमजोरी का वर्णन नहीं करो, सदा अपनी हिम्मत पर निश्चय। निश्चय और बाबा, बाबा की धुन लगी हो तो निर्बलता का खात्मा होता जायेगा। मेरा बाबा बैठा है। हर बात में मुझे बाबा जरूर मदद करेगा। बस बाबा बैठा है फिर क्या! स्वयं को परिवर्तन करने के लिए सिर्फ दृढ़ संकल्प की शक्ति चाहिए। दृढ़ संकल्प ही सब कमजोरियों को मिटा देता है। दृढ़ संकल्प करो मुझे करना है तो कर लेंगे। हम सर्वशक्तिमान बाप के बच्चे हैं, हमारा दृढ़ संकल्प है कि हमें विश्व का कल्याण करना ही है तो हम क्यों नहीं कर सकते। है सारी दृढ़ संकल्प की बात। अच्छा।